मौक्तिक

सम्पादक

मूलचन्द 'प्राणेश'

प्रकाशक

राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से

भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान

बीकानेर (राजस्थान)

प्राक्कथन

'मौक्तिक' हिन्दी एवं राजस्थानी कविताओं का सुंदर संकलन है। इसमें तैतीस कवियों की ४४ रचनाओं को समाविष्ट किया गया है। हिन्दी की २३, राजस्थानी की २१ एवं संस्कृत की १ रचना इसमें स्थान पा सकी है। इसमें अधिकांशत: उन कवियों की रचनाओं को स्थान दिया गया है जो या तो बीकानेर क्षेत्र के मूल निवासी हैं या जिन्होंने अपना कार्य-क्षेत्र इस क्षेत्र को बना लिया है।

इसमें सम्मिलित प्राय: सभी कविताओं का विषय राष्ट्रीय भावों के रूपात्मक अनुभवों से अलंकृत है। राष्ट्र की जागृति के लिए तथा बराबर उस भाव को सजग बनाये रखने के लिए ऐसी राष्ट्र-भक्ति-पूर्ण कविताएं जनमानस में उस भाव संस्कार का सदैव बीजारोपण करती हैं। सामाजिक चेतना के लिए भी ऐसी कविताओं का मूल्य बराबर बना रहता है। इसमें सम्मिलित कतिपय जिन कविताओं का राष्ट्रीय भावों से अतिरिक्त भाव बोध होता है मूलत: उनका भी राष्ट्रीयभाव पोषण करने का भाव ही है। चाहे वे मानवतावाद का परिपोषण करने वाली हैं और चाहे वे राष्ट्र भाषा हिन्दी का समर्थन करने वाली। कुछ कविताएं वर्तमान समय को व्यक्त करने वाली हैं जिनमें आक्रोश अथवा खेद का तीव्र स्वर है तो कुछ कविताओं का स्वर सुखद भविष्य की मधुर कल्पनाओं से समन्वित है। ऐसी कविताओं में आशा और विश्वास के स्वर अधिक मुखरता पा सके हैं। कुछ कविताएं बंगला देश जैसी जीवंत घटनाओं का चित्रण करती हुई, नजर आती हैं। उनमें वीरता की दुहाई, बलिदानों की प्रशंसा एवं राष्ट्र को सदा-सदा के लिए आजाद देखने की तीव्र कामना है। समन्वयवादी स्वर भी इन कविताओं में अपना निराला स्थान रखता है। हिंदू हैं तो क्या और मुसलमान हैं तो क्या अंतत: सभी भारत माता की संतान हैं। तब भेद-भाव कैसा ? गीता और कुरान उसी एक चिरंतन सत्य का ही तो बोध करवाते हैं। जहां इस देश के रक्षक अर्जुन-भीम जैसे वीर-धीर बलवान रहे हैं उसी के रक्षक अब्दुल हमीद, कीलर और शैतानसिंह जैसे निर्भय और अडिग वीर रहे हैं।

यह शौर्य की धरती है। यहां क्रांतियां पलती रही हैं। जीवन की बाजी लगाकर भी इस की शान रखना है—जय-विजय के स्वर का संधान करना है। यहां के कवियों ने सदैव सिंधु राग का आलाप किया है। मौक्तिक का कवि भी बलिदानों की महिमा का बखान करता है—

तन मन धन सब करे न्यौछावर, चादर स्वाभिमान की
वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की

भारत की पुरातन परम्परा है कि वह किसी को उजाड़ता नहीं, बल्कि बसाता है; जुल्मों का प्रतिकार करता है। अभी पिछले दिनों जब मानवता के हत्यारों ने (वर्तमान बंगला देश में) कहर ढाहना शुरू किया तब हमारे देश ने ही उन पर गाज पटक कर 'गाजी' को डुबोया, नियाजी को झुकाया और मानवता की पुनः प्रस्थापना की—

आपने कितने घर उजाड़े हैं
हमने उजड़े हुए बसाये हैं
तुमने बोये हैं पेड़ कांटों के
हम तो फसले बहार लाए हैं

और तभी 'मौक्तिक' का कवि आजादी को हासिल करने वाले का अभिनंदन करता है और कहता है—

शैतानों के जबड़ों में से लाई जाती है आजादी
मस्तक का मोल चुकाकर के पाई जाती है आजादी

× × ×

जो खून शहीद बहाते, उसका पार नहीं हो सकता है
मां बहिनों का बलिदान कभी, बेकार नहीं हो सकता है

यह देश हमेशा से लड़ना, मरना और शत्रु को मारना जानता है परंतु हार मानना नहीं जानता। यह धरती वीर प्रसूता है। इसके पानी में वीरत्व है। यहां, धरती का मोल माथा देकर चुकाया जाता है। यहां कवि आजादी के प्रतीक तिरंगा में शहीदों का दर्शन करता है। साथ ही कवि को इस बात का पश्चात्ताप भी है कि जो भारत भरे पूरे परिवार का मालिक है किंतु उसकी संतान सुखी नहीं है। स्वाधीनता और पराधीनता में अंतर है किन्तु उस

शासक और इस शासक की मौज-मस्ती में कोई अन्तर नहीं है। वह पराया और यह 'स्व' है। 'मौक्तिक' का कवि आज की छलना और प्रवंचना से भी अत्यंत दुखी है। श्यामपट्टों एवं पोस्टरों पर 'आदर्श वाक्य' लिखे हुए हैं किन्तु कार्य उसके विपरीत किया जाता है। कवि गांधी का सश्रद्धा स्मरण करता है और उनके अनुयायियों पर व्यंग्य कि वे उनके आदर्शों पर कितना चलते हैं। और इसीलिए एक कवि ने इस बात की भर्त्सना की है कि जिस राष्ट्रभाषा हिन्दी को महात्मा गांधी चाहते थे वह 'अपने ही घर में प्रवासिनी हो रही है।' और इसीलिए एक कवि ने 'मायड़ भासारै सिर-जणहारां रै नांव' अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी है। 'मौक्तिक' का कवि जहां प्रकृति वर्णन में अपनी अनुरागात्मकता रखता है वहां वह सभी के लिए मंगल कामना करता हुआ भी दृष्टिगोचर होता है—'मरणै री भूख जियो', 'जिण आजादी नै कायम राखी बा तरवार जियो', 'बीरां री बड़क जियो' और 'आगै री आस जियो' जैसे प्रयोग हृदय में संमोहन उत्पन्न करते है तथा कानों को सरस।

इसीलिए इस धरती का मोल अनमोल है—

ई धरती रो मोल आंकलै, दुसमीरी औकात नहीं
रगत सींच म्हे बेल बधाई, कोरी थोथी बात नहीं

यहां का कोई कवि 'इतिहास रचें' की सुन्दर भावाभिव्यक्ति करता है तो कोई यह साधिकार कहता हुआ भी सुनाई पड़ता है कि 'आजादी प्राप्ति के बाद जो-जो कार्य हमारे देश में हुए हैं, वे कम नहीं हैं। आज हम अपने पैरों पर खड़े हैं किन्तु कवि यह भी स्वीकार करता है कि अभी शोषण से मुक्ति पाना है। कोई कवि जीने के लिए मरना सीखो का पाठ पढ़ाता है। कोई कह रहा है—नाराबाजी निरर्थक है, श्रमनिष्ठ बनो। किसी कवि के स्वर में निरंतर गतिशीलता का आग्रह तो किसी को अभीष्ट है—

कण-कण से आवाज आ रही, हमें चाहिए एकता

मौक्तिक का एकमात्र संस्कृत कवि अनेक मंगल कामनाओं के साथ उद्‌बोधन के स्वर में भोगी जीवन के त्याग की ओर संकेत करता है। तो कोई यहां राष्ट्रभावों के साथ प्रकृति संस्कृति के गीतों का उद्‌गाता बना हुआ है। किसी-किसी कवि का स्वर सभी भावों का वाहन करता नजर आता है। अत: 'मौक्तिक' इस प्रकार लघु संकलन होता हुआ भी अपनी-अपनी दिशा में कवियों के भावबोध का प्रतिनिधित्व करता है।

—सूर्यशंकर पारीक

भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर

प्रकाशित-साहित्य

✧ रासो साहित्य और पृथ्वीराज रासो — नरोत्तमदास स्वामी	१२.००
✧ प्राचीन काव्यों की रूप परम्परा —अगरचन्द नाहटा	१०.००
✧ गोगाजी चौहान री राजस्थानी गाथा —चन्द्रदान चारण	१०.००
✧ अलखिया सम्प्रदाय —चन्द्रदान चारण	४.००
✧ अमिय हलाहल मदभरे —श्रीगोपाल गोस्वामी	७.००
✧ नागदमण [कृष्ण-भक्ति काव्य] — मूलचन्द 'प्राणेश'	१०.००
✧ रणमल्ल छंद [वीररसात्मक काव्य] —मूलचन्द 'प्राणेश'	७.५०
✧ मौक्तिक [कविता-संकलन] —मूलचन्द 'प्राणेश'	४.००
✧ वैचारिकी का बीकानेर अंक	१०.००
✧ वैचारिकी [शोध-त्रैमासिकी] वार्षिक	१२.००

संपर्क : **संचालक**
भा. वि. मं. शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर (राज०)